Murli related Question Answers

Brahma Kumaris

by BK Anil

YOUR QUERIES & SOLUTIONS – MURLI RELATED

Q 1: Aaj ki Murli ke mahavakyo me Almighty baba ne kaha tumhara vrat, niyam kya hai ? baba ne aakee vrat rakhvaya hai.. Mai samajhti hun purity ki baat hai khaan paan ki baat nahi.. iska spashti karen baba kaun se vrat ki baat kar rahe hain ?

भक्ति मार्ग में मुख्यतः हम खान-पान की शुद्धि या त्याग को ही व्रत – नेम का मुख्य अंग समझ पालन करते हैं | यहाँ पर बाबा का यह मतलब नहीं की खानपान की शुद्धि नहीं रखनी है क्योंकि बाबा ने सार रूप में दो बातों पर जोर दिया है वह है याद और पवित्रता | यही हमारा मुख्य स्लोगन भी है योगी बनो, पवित्र बनो | पवित्र नहीं तो ब्राह्मण नहीं, याद नहीं तो बाप से प्यार नहीं | पवित्रता के व्रत में तन के साथ मन, धन, अन्न की शुद्धि का भी समावेश है, हर एक दुसरे से जुड़े हैं | हाँ चूँकि हम हठयोगी नहीं हैं तो हमें अन्न का त्याग नहीं करना है बल्कि हल्का, सात्विक अन्न ग्रहण करना है इस बात पर विशेष ध्यान देना जरुरी है | बाबा भक्ति मार्ग वाले व्रतों से तुलना करके हमें यही सजग करा रहे हैं कि अब ज्ञान मार्ग में हमें तन से भी अधिक महत्व मन और बुद्धि की शुद्धि वा पवित्रता की तरफ देना है क्योंकि ज्ञान मार्ग में हम ईश्वर नाम स्मरण नहीं करते किन्तु अधिकार

से, सम्बन्ध से परमात्मा को याद करते हैं और याद एकरस, एकटक तभी हो सकती है जब तन के साथ साथ हमारा मन और बुद्धि भी पवित्र हो, दिल सच्चा हो, उद्देश्य स्पष्ट हो |

Q 2: मुरली में बाबा कहते हैं मीरा को मात्र ज्ञान की अंचली मिलेगी उसे सतयुग में ऊंच पद नहीं मिलेगा पर बाबा यह भी तो कहते हैं जब भक्ति पूरी होती है तो उसका परालब्ध ज्ञान मिलता है. पर मीरा ने तो सबसे ज्यादा भक्ति की है तो उसे सबसे ज्यादा ज्ञान मिलना चाहिए और ज्ञान की परालब्ध भी . कृपया इस विरोधाभ्यास का स्पष्टीकरण कीजिये ?

मीरा दूसरे जन्म में भी भक्तिन बनी होगी, वैकुण्ठ में तो जा नहीं सकती | इसका तात्पर्य यह भी तो हो सकता है कि ५०० वर्ष पहले स्वर्ग की स्थापना ही कहाँ हुई थी जो जायेगी | स्वर्ग में वही जायेगा १) जिसने बहुत लम्बे काल से भक्ति की है एक दो जन्म वाली भक्ति नहीं २) उस आत्मा का ज्ञान माला के मणके में पार्ट है न कि भक्त माला के मणके में | मीरा के एक, दो या तीन जन्म की भक्ति से हम अनुमान नहीं लगा सकते कि उसे ज्ञान का प्रालब्ध मिलेगा या नहीं | मीरा इस समय ज्ञान में हो भी सकती है यदि उसकी भक्ति लम्बे समय से चली है और वह भक्त माला की न हो | शायद आप में भी कोई हो, बाबा आपको क्या टाइटल देता है ज्ञान

मीरा, है ना |चूँ्कि बी.के भी साधारण आत्माएं तो है नहीं, ड्रामा में श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ पार्ट वही बजाते हैं | इसलिए यह भी तो पू्री सम्भावना बनती है की इस

ड्रामा में श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ पार्ट पिछले जन्मों में बजाये हों | लम्बे समय का मतलब जब से भक्तिमार्ग की शुरुआत होती है याने २५०० वर्ष पहले से क्योंकि पहले पहले देवी देवता वाली आत्माएं ही तो वाम मार्ग में जाती हैं | कलियुग के नामी ग्रामी भक्तों के fame से हम यह अनुमान कदापि नहीं लगाएं कि यह बहुत काल की भक्त या भक्तिन है | उनका नाम इसलिए होता है क्योंकि वे भक्तिमार्ग की सतोप्रधान आत्माएं होती हैं जो ड्रामा अनुसार संसार को श्रेष्ठ कर्म करने व ईश्वरीय मार्ग पर चलने की प्रेरणा देने के निमित्त बनते हैं | बी.के दीखते साधारण हैं लेकिन पुराने भक्त तो उनको ही कहेंगे ना | इसे इस तरह भी समझ सकते हैं सतयुगी - त्रेतायुगी आत्माएं ही भक्ति में भी अपने स्वर्ग में मिले प्रालब्ध अनुसार पार्ट बजाती हैं जिसके बारे में बाबा कहते हैं जो जितना भक्ति में तीखा होता है वह ज्ञान में भी तीखा जाता है और वे ही आत्माएं संगमयुग में परमात्मा को पहचान कर उनसे पुनः स्वर्ग का वर्सा लेती हैं | संगम युग पर तो प्रालब्ध का टिकेट लेना ही पडेगा स्वर्ग में एंट्री पाने के लिए, दू्सरा कोई उपाय है

नहीं चाहे कितना ही बड़ा भक्त क्यों न हो | ओम

शांति

Q 3: बाबा मुरलियों में कई दफा कहते हैं “ ज्ञान, भक्ति और वैराग्य ? क्या यह सही क्रम है ? क्या इसकी जगह भक्ति, ज्ञान , वैराग्य ऐसा नहीं होना चाहिये ?

बेहद की दृष्टि से पहले वाला सही है ज्ञान, भक्ति और वैराग्य. ज्ञान सृष्टि चक्र के पूर्वार्ध और भक्ति उत्तरार्ध से सम्बंधित है, अब हमारा भक्ति से अर्थात पुरानी दुनिया से बेहद के वैराग्य का दौर चल रहा है, उसी तरह स्थापना, पालना और विनाश का क्रम भी सही नहीं है वास्तव में होना चाहिए स्थापना , विनाश और फिर पालना याने पहले ब्रह्मा द्वारा नयी सतयुगी दुनिया की स्थापना उसके पश्चात आसुरी दुनिया का विनाश शंकर द्वारा और फिर दैवी दुनिया की पालना विष्णु द्वारा यही सही क्रम है

Q 4: इस वाक्य को हम किस तरह बेहतर रीती से समझ सकते हैं देह सहित देह के सर्व संबंधों को भूल स्वयं को आत्मा समझ मुझे याद करो क्योंकि देह तो अन्न की मांग करता है, वह पीड़ा से गुजरता है, देह ही योग और पुरुषार्थ का आधार है, हमें उसकी देखभाल में समय और एनर्जी देनी पड़ती है, जब देह द्वारा दूसरों की सेवा करते हैं तब हमें कर्म **conciousness** में आना पड़ता है जैसे मार्केट जाना, कार्य करवाना इत्यादि · अगर हम कहते यह तन बाबा को अर्पण कर दिया है, चलो इसे

कुछ हुआ तो भी कोई बात नहीं, पर इसे दर्द है तो दवा तो देनी ही पड़ेगी याने कर्म चेतना में आना ही पड़ेगा। हाँ कई ऐसे ज्ञान के पॉइंट्स हैं जैसे पूर्ण समर्पण, **nothing new,** बाबा सदैव मेरे साथ है, मैं यह शरीर नहीं चैतन्य आत्मा हूँ और भी कई पॉइंट्स हैं, यह सब कुछ समझते हुए भी मुझे कार्य तो

करना ही है तब इसे भूलना क्या इतना आसान है ?

I appreciate you open hearted question. You have caught the main essence of the Murli.

बहन जी, आपने हो खुले दिल से प्रश्न किया है उसकी तारीफ़ करता हूँ , आपने मुरली के सार को पकड़ा है । जावाब को ज्यादा विस्तार में ना ले जाते हें में चाहूँगा कि आप शब्दों को अपनी आत्मा की गहराई से अनुभव करें जिससे कि वह आपके मन, शब्द और कर्म में प्रतिबिंबित हो क्योंकि जानना याने अनुभूति करना और अनुभूति करना माना कार्य व्यवहार में दिखाई देना, यदि नहीं हो रहा तो समझना कि हमें भ्रम है कि हमने जान लिया है इसे भी गुप्त माया ही कहेंगे, हमें सतत प्रयत्न द्वारा हमारे पुराने देह अभिमान के संस्कार को जड़ से समाप्त करना है क्योंकि यह संस्कार जन्मजन्मान्तर से चला आ रहा है, हमें अपनी देह को प्यार और उसकी संभाल उसी तरह से करनी है जिस तरह से हम अपनी car या mobile की

करते हैं, उसकी समय समय पर maintenance भी करनी है पर बिना किसी deep attachment के अपनी identity को अलग करते हुए, जब हमारा शरीर किसी रोग से अथवा ऑपरेशन से गुजरता है तो क्या हम अपनी अलग पहचान को भूलकर देह के साथ एक नहीं हो जाते कि मैं ही रोगी हूँ अथवा मेरा शरीर का ऑपरेशन हो रहा है, इसलिए ही

बाबा बार बार ज्ञान का हथौड़ा मारता है, अपने को आत्मा समझो, दूसरों को भी आत्मा के रूप में देखो, उन्हें भी याद दिलाओ तो उन्हें भी और स्वयं को भी स्मृति बनी रहेगी | साक्षी रहेंगे तो स्पष्ट दिखाई देगा, योग से हमारी बुद्धि स्पष्ट (clear) बनती है |जैसे किराए के मकान में आप को रहना पड़े

तो ख़ुशी ख़ुशी मकान को छोड़ते हैं न जब agreement पूरा हो जाता है | यही प्रैक्टिस अभी से करनी है

जो सतयुग में नेचुरल होगी | शरीर को कष्ट, पीड़ा सुख दुःख अपने जगह होता रहे और आप अपने स्वमान में अडिग रहें | यह प्रैक्टिकल अभ्यास का समय चल रहा है | Theory wala samay ab nahi raha | Usi tarah sambandh me bhi aana hai karmic account anusaar jaise stage par actors ko sambandh me aana padta hai par drama khatm to part khatm . इस तरह से बेहद के स्टेज के बेहद पार्टधारी की स्मृति में रहने से, सभी से आत्मिक

सम्बन्ध रखने से, बेहद के परिवार का हिस्सा समझने से मैं , मेरा के मिथ्या identity से आत्मा मुक्त हो हल्का फ़रिश्ता बन निमित्त मात्र पार्ट बजायेगी और अंत में उड़ता पंछी बन बाबा के संग परमधाम को प्रस्थान करेगी | लेकिन वह स्थिति तभी संभव है जब हम पहले अपने बुद्धि की और मन की सफाई कर लें, अपनी उर्जा बिंदु को चार्ज कर शक्तिशाली बना लें | अपने पिछले जन्मों के karmic account को चुकता कर लें | तभी बाबा समय अनुसार अति रिफाइंड विधि भी दे रहें हैं | पर करो तो अनुभव हो और शक्ति मिले | हमारा सरेंडर बुद्धि से होता है दिल से नहीं, उसी प्रकार हमारा ज्ञान बुद्धि में होता है आचरण में नहीं | जबकि सरेंडर दिल से करने और ज्ञान आचरण में लाने की बात होती है | बाबा और ड्रामा हमारी ऐसी स्थिति देखने के लिये इंतज़ार कर रहे हैं | आत्मिम पर दो विडियो अपलोड किये हैं

Q 5: Kindly clarify which month is called as Purushottam mass , and which year is called purshotam year.

<u>As per Bhakti :</u> There is Purushottam mass or Purushottam month not year.

The concept of Adhika Maas is unique to the traditional Hindu lunar calendar based on the cycles of the Moon. The lunar calendar adds one extra month every third year. This extra month is known as

Adhik Maas, Mal Maas, Purushottam Maas, Malimmacha, Adhik Ashad Maas or Adhik Ashada Mahina.

A lunar month is around 29.5 days long whereas a solar month is 30 to 31 days long. The lunar year consists of 354 solar days while solar year consists of 365 days. So, as years pass by each lunar month starts earlier to the corresponding solar month. There is a difference of 11 days between the lunar and solar year. In every three solar years the difference between the two calendars becomes a full month or around 29 days. To compensate or make the two calendars similar an extra month is added. Vasishta Siddhanta, a treatise of Sage Vasishta, says that the Adhika Masa occurs after every 32 months, 16 days and 24 minutes.

Just as there is the lunar year with the extra month (Adhik Maas), so is there a lunar year with a diminished or reduced month, with only eleven months in the year. The lunar year comprising of eleven months is very rare which occurs once in 140 or 190 years. But the extra month or Adhik Maas comes every third year.

Adhik masa in true sense is celebrated as sacred month for spiritual development not for worldly development. That is why, during this period, marriages, tonsures (Mundan), inaugurations of new home (Bhumi poojan, Graha pravesh), fasting with desire of some worldly gains, buying new ornaments and vehicles are not encouraged by our ancestors.

Significance of Adhik Maas in Kali Yug

In the present world, people are so busy and families are scattered worldwide. It is therefore said
that for such families Adhik Mas is the most appropriate time to hold religious rituals family as a
whole to get Adhik (maximum) benefits. Hindu saints have expressed that the multiple spiritual
merits such as wisdom, self-realization and inner peace etc. can be acquired by performing pujas,
fasting, japas, and recitation of scriptures, taking sacred dips in the rivers in this one month
compared to what one obtains by doing same rituals in other 12 months.

Since Lord Vishnu, the protector of this universe in the form of Purshottama is the head of this
Adhika Masa, the Japam, Homam, and Danam done in this Adhika Masam will have Adhika or extra
benefits. Adhika Masam is one of the dearest Masam to Lord Vishnu. During this Purushottam masa
therefore people perform various types of religious rituals. Children recite mantras, prayers to
obtain intelligence, memory power, married couples and unmarried ladies observe fasting, recite of
religious scriptures, parayans, various types of pujas and havans and Vrats while older people
perform japas, pradakshinas, pilgrimages. Any Graha or specific dosh nivaran pujas are performed in
Purushottam masa to rectify the horoscope which gives ten times better result to the individual.

Keeping fast during this period is equivalent to performing a hundred yagnas, which acts as a path to

attainment of place of complete bliss, delight and peace.

During the period of the observance of a vrata either complete or partial fasting on certain specific days, one should keep oneself clean and pure, observe celibacy, speak truth, practice patience, avoid non-vegetarian foods and conscientiously perform all the rituals. Along with rituals, according to ability, distribute charities and donations.

This Adhika mas is also called Mal Maas because this is the time one can get rid of their weaknesses, pride, bad habits, thoughts and actions. For that, one can take a sacred bath in any holy rivers to removes sinful things and bad elements from body and mind and do the path or listen to Hindu Shastras & Granths etc.

The Purushottam Maas is the right time for establishing our relationship with God to obtain moksha.

The Importance of Adhik Maas lies in the fact, one gets the chance to travel to the realm of self-revaluation, self-development, self-reflection, self-assessment, self-retrospection and introspection.

As per Gyan :

It is Purushottam yug not even month. In a 5000 year world cycle, there are 4 yugas or epochs i.e Satyug, Tretayug, Dwaparyug and Kaliyug, each comprising of 1250 years. The fifth one is incognito called as Confluence age or Purushottam yug with a small period of 100 years. Purushottam mass in bhakti is nothing but the yadgaar or remembrance of this Purushottam yug. This yug is very

auspicious and very very beneficial compared to other yugas since reincarnation of Supreme soul take place in this period. This period is meant to do intense effort to burn our past evil sansakars and imbibe divine qualities, to claim our heavenly birthright from the God father, in other words it is the golden opportunity to attain Mukti and Jeevanmukti which in other yugas are not possible. Like Adhik maas, this is an extra time given to us to make our destiny for the entire cycle. Now we need not have to follow the dictates as given in the scriptures and shastras which we had been doing since ages but follow direct shrimat or directions given by God. We have to take vrat of abstaining from 5 vices and purify our soul not by physical bath but by being in soul conscious stage and remembering the incorporeal God father. This will absolve our past birth sins and emerge divine qualities within.

Q 6: आज की मुरली के वरदान में आया है कि क्वांटिटी वाले संकल्पों को समाकर क्वालिटी वाले संकल्प करों कृपया इस वाक्य की गहराई को आसान शब्दों में स्पष्ट करें ?

आज के वरदान में मुख्य रूप से स्व पर अटेंशन द्वारा विश्व की सेवा पर फोकस करवाया है | लेकिन देखने में यही आता है कि हम पहले सेवा पर ही हाई जम्प लगा देते जो कि अंतिम सब्जेक्ट है | हम यह स्लोगन भी बार बार सुनते हैं कि स्व स्थिति से परिस्थिति पर विजय, स्वपरिवर्तन से विश्व परिवर्तन, विश्व सेवा से पहले स्व सेवा इत्यादि ....

सार रूप में जिसका यही अर्थ है कि पहले स्व पर अटेंशन जरुरी है , हमारे कोर्स का पहला पाठ भी स्व परिचय वा स्व स्मृति है | कहते भी हैं न स्व है तो विश्व है, सारे सम्बन्ध हैं | भक्ति में भी कहा गया है जिसने स्व को नहीं जाना उसने कुछ नहीं जाना , खुद को जानो तो खुदा को जान लोगे | स्व याने आत्मा, दूसरा याने संसार, संसार याने पराया | पराया याने परिवर्तनशील, वह कभी भी स्थायी नहीं हो सकता | स्वचिंतन व स्वदर्शन से ही स्वउन्नति होती है और पर दर्शन, परचिन्तन से अवनति | स्व को बदलना जो कि हमारे हाथ में है इसके बजाय दूसरों को सुधारने पर अटेंशन व समय देंगे तो टेंशन के अलावा कुछ हाथ नहीं आता |

यह दूसरा ही विस्तार याने संसार की तरफ ले जाता है, रुलाता है, थकाता है जिसकी अनुभूति हम द्वापर से करते आये हैं | संसार की शुरुआत पहले संकल्प से ही शुरू होती है जिसका मूल है देह अभिमान | मैं आत्मा, मेरा बाबा से क्वालिटी संकल्प - याने समर्थ संकल्प का निर्माण तो मैं शरीर

अथवा देह के संसार से क्वांटिटी वाले संकल्पों याने व्यर्थ संकल्प का निर्माण होता है | जब हम स्व में याने सार में स्थित होकर क्वालिटी संकल्पों के साथ स्व को टेंशन मुक्त कर विश्व सेवा पर उतरेंगे तभी ही सच्चा सच्चा विश्व कल्याणकारी बन दू

्सरों को भी टेंशन से व परिस्थितियों से मुक्त करा सकेंगे | जो अपनी सर्विस पहले करके स्व परिवर्तन करने में सफल हो जाता है उसको दू्सरों की सर्विस करने में मेहनत नहीं करनी पड़ती है क्यों कि वह दू्सरों के लिए एक example बन जाता है, लोग स्वतः उसको फॉलो करने लगते हैं | सेवा स्वतः होने लगती है |

Q 7: कल की मुरली में आया है कि स्वर्गवासी बनने में एक जन्म लगते हैं पर नरकवासी बनने में ८४ जन्म लेने पड़ते हैं । ८४ जन्म के बाद नरकवासी बनना यह तो मान्य है पर हम तो २१ जन्म के बाद ही नरकवासी बन जाते हैं फिर ८४ जन्म के बाद क्यों कहा ?

हाँ यदि हम सृष्टि चक्र के ज्ञान की गहराई में जायेंगे तो हम जानेंगे कि बाबा ने मुरली में कहा है हमारी गिरती कला की शुरुआत सतयुग में जन्म लेते ही शुरू हो जाती है भले ही वह कम डिग्री में क्यों न हो । हमारी उतरती कला शुरू हो जाती है पहले जन्म से ही और यह उतरती कला ही नरक की यात्रा की शुरुआत कहेंगे क्योंकि कला कम होना क्या है ? उतना सुख के जगह पर दुःख आना । १६ कला के हिसाब से सतयुग में मात्र २ कला कम

और त्रेता में ४-६ कला कम होने से इन दो युगों को सुखधाम कहा गया है पर द्वापर से जब कला ८ से कम याने आधे से अधिक कम होने लगती है तो आत्मा को अपनी कर्मेन्द्रियों व विकारों के अधीन होने से दुःख की भासना आने लगती है जिससे दुःखधाम की शुरुआत तो हो जाती है पर ब्राह्मणों के लिए तो वास्तविक घोर दुःख तभी शुरू होता है जब कला ४ या इससे कम हो जाती है याने कलियुग के अंतिम १-२ जन्म और इसे ही नरकतुल्य कहेंगे | केवल संगमयुग याने कलियुग के अंतिम समय पर ही १ जन्म चढ़ती कला होती है जब परमात्मा द्वारा आत्मा को संपूर्ण और सत्य ज्ञान की प्राप्ति होती है,आत्मा परमात्मा से योग लगाकर गुण व शक्तियों से भरपूर अथवा पूर्ण चार्ज हो जाती है और स्वर्गवासी बनती है तो जैसे कहा गया है ब्रह्मा को विष्णु बनने में एक जन्म और विष्णु को ब्रह्मा बनने में ८४ जन्म लगते हैं | वैसे ही नरकवासी से स्वर्गवासी बनने में १ जन्म और स्वर्गवासी से नरकवासी बनने में ८४ जन्म |

Q 8: क्या आप शिवबाबा की मुरली अनुसार सोमरस का अर्थ स्पष्ट कर सकते हैं ?

सोमरस अर्थात वह रस जो नशा चढ़ाता है । अमृत को भी सोमरस कहते हैं । बाबा की मुरली

अनुसार सोमरस स्थूल साधनों से उत्पन्न नशा या अमरत्व की बात नहीं । बाबा तो ज्ञान रूपी अमृत अथवा रस की बात करते हैं जिसका पान जब आत्मा करती है तो उसे अविनाशी अतीन्द्रिय सुख का
वह रूहानी नशा चढ़ जाता है जिससे वह श्रीमत अनुसार संगमयुग के एक जन्म में पुरुषार्थ कर मनुष्य से देवता बन स्वर्ग में २१ जन्म अमरत्व पद को प्राप्त करती है और १००% हेल्थ, वेल्थ,हैप्पीनेस का उपभोग करती है । स्थूल अमृत पान से कोई सच्चा अमर नहीं हो जाता और ना ही कोई अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है, वह नशा भी अल्पकाल का गिरती कला में ले जाने वाला होता है क्योंक वे देह के लिए मनुष्यों द्वारा बनाए हुए होते हैं न कि परमात्मा द्वारा आत्मा के लिए । ओमशांति

Q 9: बाबा ने कुमारियों प्रति अव्यक्त महावाक्य उच्चारे हैं कि कुमारियाँ सहयोगी रहेंगे लेकिन समर्पण नहीं होंगे । जो समर्पण नहीं होंगे वह समान कैसे बनेंगे ? यहाँ बापदादा सेंटर पर समर्पण होने की बात कह रहे हैं या मन से समर्पण होने की । तो मैं कौन सी बात को अमल में लाऊं ? क्या लौकिक जॉब करना गलत है । बाबा के यथार्थ वाक्यों को स्पष्ट कीजिय ?

First let be clear on these words. Sahyogi and

Samarpan, Sameep and Samaan, Lokik job and Ruhani Job.

सहयोगी वो होते हैं जिन्हें पू्रा निश्चय नहीं होता या फिर जो पू्रा श्रीमत को फॉलो नहीं कर सकते। यह हर एक का व्यक्तिगत चुनाव है। जिनमें यह दोनों गुण है वो ही समर्पण होते हैं चाहे सेंटर पर या मधुबन में लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं कि केवल सेंटर या मधुबन में ही समर्पण हो सकते हैं। समर्पण में स्थान से ज्यादा महत्व मन का होता हैं। मन बुद्धि से समर्पण होना होता है। तब वहाँ पर मैं और मेरा नहीं रहता (There is no me and mine). इसको ही बाप के समीप कहा जाता है। समीप ही सामान बनते हैं। नहीं तो फिर बाह्य समीपता हुई। समीप आतंरिक मन बुद्धि से होना चाहिय, वे ही समान बनते हैं। यदि यह भावना है कि सब कुछ बाबा का है (Everything belongs to baba) जिसे बाबा ट्रस्टी समझ चलने को कहते हैं तब इससे कुछ फरक नहीं पड़ता कि आप घर पर रहते हो या ऑफिस में कार्य करते हो। हर बाबा का बच्चा ड्रामा अनुसार अपने अपने सेवा के क्षेत्र में कार्यरत है। सभी का समर्पण practical में संभव भी नहीं है। अटेंशन इस बात का देना होता है

कि हमारे द्वारा रूहानी सेवा भी हो रही है या नहीं ? अपने सहकर्मियों या सम्बन्धियों के सामने सैंपल रूप में दिख रहे हैं या नहीं ? हमारे द्वारा बाबा

का सन्देश अथवा बाबा की प्रत्यक्षता हो रही है वा नहीं ?

दादी गुलज़ार ने भी कहा था कि लौकिक जॉब में डबल कमाई है पर हम यदि उसका लाभ उठाते हैं तब ।

दूसरी तरफ यदि हम समर्पित भी हैं लेकिन सेवा नहीं करते, केवल खाते ही रहते हैं अथवा डिससर्विस (disservice) करते हैं तो वो भी हिसाब बन जाता है ।

हर बात में बैलेंस रख के चलना जरुरी है । बैलेंस ही समझदारी है । स्वस्थिति और सेवा का बैलेंस हो । युक्ति से आगे बढ़ना है । परिणाम ज्यादा महत्वपूर्ण है बजाय केवल नियम पर ही चलने के । Outcome is important rather than only focussing on the disciplines .

जॉब चाहे लौकिक हो यदि उसमें रूहानियत की झलक दिखाई देती है तो वो भी सेवा है और यदि अलौकिक कार्य करते भी उसमे यदि लौकिकता दिखाई देती है तो वो रूहानी सेवा कहाँ हुई ।

Q 10: जो देवता कुल की आत्माएं हैं उन्हें सबसे ज्यादा दुःख भोगना पड़ता है क्योंकि उन्होंने ही सबसे जास्ती सुख का भी अनुभव किया है । तो क्या इसे ऐसा समझना चाहिए कि जो ऊंच पद प्राप्त करते हैं उन्हें जास्ती सुख की प्राप्ति होती है तो सबसे जास्ती दुःख की भी प्राप्ति होती है । तब तो ऊंच पद के लिए पुरुषार्थ करने के लिए भी डर

लगता है क्योंकि ऊंच पद मतलब सतयुग में और भी ज्यादा सुख और कलियुग में और भी ज्यादा दुःख । यह प्रश्न मूर्खतापूर्ण भले लगे पर अर्थ तो यही निकलता है ना

दुःख की अनुभूति के बिना सुख की वैल्यू नहीं । जिस प्रकार रात के बिना उजाले का महत्व नहीं । जास्ती सुख का मज़ा भी तब ही ले सकते हैं जब जास्ती दुःख की अनुभूति से गुजरते हैं । जैसे ऊँचे प्राप्ति के लिए ऊँचे चुनौतियों से गुजरना पड़ता है । हमारा हाईएस्ट दुःख भी कलियुगी मनुष्यों की तुलना में नहीं कहा है पर हमारे ही हाईएस्ट स्वर्गीय सुख की तुलना में कहा है । दूसरी बात, सारे ड्रामा में हमारा सुख ३/४ रहता है केवल कलियुग के कुछ ३-४ जन्मों में ही जास्ती दुःख की फीलिंग होती है क्योंकि तमोप्रधानता अति पर होता है वो भी हमारे ही विकर्मों के कारण । उसमें भी संगमयुग में ज्ञान की वजह से और बाबा के साथ के कारण दुःख की फीलिंग नहीं आती । और यदि हम पूरे ड्रामा पर नज़र डालेंगे तो हम पायेंगे कि ९०% हमें सुख की और मात्र १०% दुःख की प्राप्ति होती है इसलिए हमें १०% दुःख की चिंता करने का उतना कारण नहीं बनता । यह तो मात्र एक ड्रामा है.. एक फिल्म की तरह इसे देखने से हल्के और

मौज में रहेंगे । जब हमें ड्रामा की सच्ची समझ आ जाती है तब हम सुख और दुःख के पार चले जाते हैं । यह सच्ची सच्ची जीवन मुक्त अवस्था है । ओम शांति

Q 11: बाबा सदा कहते हैं मैं तुम बच्चों को ब्रम्हाण्ड का मालिक बनाता हूँ । इसे स्पष्ट कीजीए ?

बाबा हमें ब्रह्माण्ड का मालिक बनाते हैं याने जब हम ब्रह्माण्ड में आत्मा के रूप में होते हैं क्योंकि वह हमारा आत्मिक पिता है तो जो उसकी प्रॉपर्टी पर हम बच्चों का भी अधिकार है । फिर सतयुग – त्रेता में हमें विश्व का मालिक बनाते हैं क्यों की तभी भारत देश ही अस्तित्व में होता है परन्तु खुद बाबा विश्व का मालिक नहीं बनता क्योंकि बाबा स्वर्ग में राज्य करता ही नहीं । ओम शांति

Q 12: बाबा की मुरली अनुसार वास्तविक विकर्म विनाश प्रक्रिया कब शुरू होती है १) जब मैं बाबा के सम्मुख परमधाम में होती हूँ या जब में परमधाम बाबा के साथ चिपकी हुई हूँ २) या जब मैं बाबा के साथ कंबाइंड स्वरुप में होती हूँ इस भ्रकुटि में और क्या यह उतना ही पावरफुल होता है जितना कि परमधाम में । क्या भ्रकुटि की यह कंबाइंड अवस्था को बीजरूप अवस्था भी कह सकते हैं ३) क्या यह अवस्था तब भी हो सकती है जब बाबा मेरे साथ कंबाइंड स्वरुप में साकार तन में होते हैं ।

साकार मुरली में बाबा ने हमेशा कहा है कि अपने को शरीर से अलग डीटेच होकर आत्मा समझ मुझे परमधाम में याद करो इससे तुम्हारे जन्म जन्मान्तर के पाप भस्म हो जायेंगे। यह स्पष्ट करता है कि

केवल परमधाम में ही विकर्म विनाश होता है जब आत्मिक स्थिति में बाबा के साथ सीधा संबंध होता है । इसे ज्वालामुखी योग अथवा बीजरूप अवस्थ भी कहा जाता है। कोई भी अन्य विधि इतना शक्तिशाली नहीं है क्योंकि परमधाम में ही आत्मा का परमात्मा के साथ बिंदु से बिंदु रूप में डायरेक्ट कनेक्शन होता है । शरीर के किसी भी बाधा और उसके संबंधों के बिना केवल अत्यधिक केंद्रित चरण में पापों को जलाया जा सकता है जो केवल परमधन में संभव है। बाबा के कमरे में एक ही स्थान पर

बैठकर भी यह अभ्यास किया जा सकता है लेकिन यह परमधाम के समान शक्तिशाली नहीं होगा

क्योंकि जब आप परमधाम में योग करते हैं तो आप न केवल शरीर के साथ अलग हो जाते हैं बल्कि

5 तत्वों की दुनिया से परे हो जाते हैं। । परमधाम में, आप पहले बाबा के सामने योग करना शुरू कर सकते हैं, फिर अभ्यास के बाद बाबा से चिपक सकते हैं यानी बाबा के साथ एक होना - बिंदु से

संपर्क

करना। यह होगा जैसे सागर में समा जाना जिसे कंबाइंड स्वरुप भी कहा जाता है। यह और भी

अधिक शक्तिशाली होगा । आप कर्म करते हुए भौतिक शरीर में कंबाइंड स्वरुप का अभ्यास भी कर

सकते हैं। इससे आपको यह अहसास होगा कि बाबा हमेशा मेरे साथ हैं और इससे आप बुरे कर्म या

विकर्म नहीं कर पाएंगे लेकिन आप बाबा के बताए अनुसार करेंगे।

As per baba's murlis when do vikarm vinash process happens actually …1) when I am in front of

baba point in paramdham… or when I am stuck to baba point in Paramdham 2) or when I am in

combined form with baba (i.e points joint together) in this bhrukuti too ? and is it as powerful as

it happens in paramdham. Can this combined state in bhrukuti be called as a beejrup state too. 3)

it may even happen when baba is in combined state with me in this sakar body.

In sakaar murlis baba has always said ***apne ko sharir se alag detach hokar atma samajh mujhe***

paramdham me yaad karo isse tumhaare janm janmantar ke pap (sins) bhasm ho jaayenge. This

clears states that only in atmik stage in paramdham vikarm vinash takes place if there is direct

connection with baba. This is also referred as Jwalamukhi yoga being in beejrup avastha or seedform

stage. No other method is as powerful as beejrup

stage because there is a point to point connection of soul with supreme soul in the soul world. Sins can be burnt only in immense concentrated stage without any hindrance of body and its relations which is possible only in Paramdhan. The same stage can be practiced even in bhrkuti sitting at one place i.e baba's room but it will be not be as powerful as paramdham because when you do yoga in Paramdham you not only get detached with the body but also go beyond the world of 5 elements. In Paramdham, you can first begin yoga being in front of baba, then after practice can stuck with baba i.e being one with baba – point to point contact. Yeh hoga jaise sagar me sama jaana, also called as combined swarup. This will still be more powerful. You can also practice combined stage being in the physical body while doing karma. This will give you the feeling that baba is always with me and this will not allow you to do bad karmas or vikarmas but you will do as per baba's shrimat.

Q 13: आज की मुरली में है जितना जो बाप को याद करते हैं, उतना उनके पाप कटते जाते हैं और जितना जो बाप के वरसे को याद करते रहते उनके खाते में खजाना जमा होता रहता है । इस बात पर कोई प्रकाश डाले ?

ज्ञान और योग के सन्दर्भ में साकार मुरली में आया है कि योग का कनेक्शन हेल्थ से और ज्ञान का कनेक्शन वेल्थ से है । थोड़ा विस्तार में देखेंगे तो योग से याने बाप को याद करने से विकर्म विनाश

होकर आत्मा पावन बनती है, स्वास्थ लाभ प्राप्त करती है तथा मुक्तिधाम जाने का अधिकारी बनती है परन्तु जब तक रचता के साथ रचना का ज्ञान नहीं होता वह जीवनमुक्ति का अधिकार याने वरसे का अधिकार प्राप्त नहीं कर सकती । सार रूप में, जीवन मुक्ति ही बाप का वर्सा है जिसके लिए कहा गया है स्वर्गीय ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार । जितना हम बाप के साथ वरसे को याद करेंगे उतना खजाना जमा होता जाएगा । याद करने से यहाँ मतलब है पुरुषार्थ द्वारा दैवीगुण धारण कर विकारों पर विजय प्राप्त करना । जितना खजाना जमा होता जाएगा उतना उंच पद के अधिकारी बनेंगे ।

Q 14: आज की मुरली में बाबा ने कहा है बच्चे किस तरह से मुरली सुनते हैं कोई पढ़कर सुनाते हैं, कोई पढ़कर फिर सार सुनाते हैं । कोई मुरली हाथ में उठाकर तो कोई मुरली हाथ में नहीं उठाकर बिगर मुरली ऐसे ही सुनाते हैं । कोई तो पढ़ते ही रहते हैं, addition कर रहस्य भी सुनाते रहते हैं, रसीले नमूने । कृपया कोई इसे अच्छे से समझायें की सही तरीका क्या है ?

आपके प्रश्न के उत्तर में स्वानुभव के अनुसार आप किसी विशेष विधि को सामान्य नहीं कर सकते । हम सब का अनुभव भी कहता है कि मुरली केवल पढ़ना नहीं होता । उसको धारण करना होता है । केवल पौना एक घंटे की बात नहीं सारा दिन

उसका मंथन एवं कर्म में व्यवहार में आचरण में लाये
तभी वह प्रैक्टिकल होगा । जब तक आप मुरली को मंथन कर अपने भीतर नहीं उतारते याने अपना निजी संस्कार नहीं बनाते तभी तक वह केवल पन्ने पर लिखे हुए शब्द ही रह जाते हैं, ईश्वरीय महावाक्य तभी बनता है जब आप उस निश्चय व भावना से सुनते हो और देवता बनने के श्रेष्ठ लक्ष्य से सुनते हो । वर्ना आज दुनिया में आध्यात्मिक प्रवचनों की कोई कमी नहीं है । इसके लिए ही कई बार मुरलियों में आया है अथवा वरिष्ठ दादियों ने कहा है कि मुरली क्लास में सुनो एक गॉडली स्टूडेंट की भाँती, मुरली सुनने के पहले १५-३० मिनट अपनी बुद्धि को योगयुक्त बनाकर सुने तभी बुद्धि में धारण होगी, देहधारी टीचर को न देख भगवन के सम्मुख बैठ मुरली सुन रहा हूँ इस भावना से व विश्वास से सुने, टीचर को निमित समझ सुप्रीम टीचर को सामने दिव्य दृष्टि से देखें । मुरली सुनते वक्त केवल शब्द ही नहीं सुने उसे अपनी बुद्धि पटल पर कल्पना कर साकार होता हुआ देखें । महत्व पूर्ण पॉइंट्स को नोट कर फिर उसपर सारा दिन मंथन करें अथवा रिवाइज करें, फिर रात्री में अथवा सवेरे भी रिवाइज कर सकते हैं जैसे भोजन भी हम २-३ दफा तो करते ही हैं । इस विधि द्वारा मुरली सुनने से वास्तव में आत्मा को शक्ति व ख़ुशी रूपी खुराक मिल आत्मा स्वस्थ बन जाती है ।

यहाँ पर मुख्य बात है कि चाहे हम मुरली को कितने भी विभिन्न तरीके से उसे रसीला बनाकर सुने,

परन्तु मुरली के वास्तविक महावाक्यों अथवा श्रीमत के साथ छेड़छाड़ न हो इस पर विशेष ध्यान दें ।

बाबा ने यहाँ यह भी स्पष्ट कर दिया है कि सम्मुख मुरली सुनना यह अति उत्तम है और यदि सेंटर

पर या कही और पढ़ते हैं तो मुरली हाथ में जरुर होनी चाहिए । Omshanti

Q 15: आज अव्यक्त वाणी में एक जगह आया आवाज़ से परे स्थिति में स्थित रहकर आवाज में आने से सामने वाली आत्मा को भी ज्ञान सुनायेंगे तो उनको उसी समय झट से तीर लगेगा इसे मैं और स्पष्ट रूप से समझना चाहती हूँ ।

जितना हम आवाज में आते हैं उतनी हमारी मानसिक उर्जा याने मेंटल पॉवर अथवा विल पॉवर की

क्षमता कम होते जाती है । मौन एक सबसे सरल उपाय है पर बाह्य मौन के साथ अंतर मौन भ

जरुरी है । जब हम आवाज से परे होते हैं तब हम शरीर से नहीं आत्मा से बात करने में सफल होते हैं । हमारा ज्ञान शरीर के लिए नहीं है आत्मा के लिए है । मौन में ही आत्मा के गुण प्रकट होते हैं । इसलिए जब दो प्रेमी जोड़ी गहरे प्रेम में उतरते हैं

तो उनका शब्द नहीं के बराबर हो जाता है केवल भाव प्रकट होता है । इसे ही दिल से दिल का मिलन कहते हैं । योग में हम उसी मौन की साधना करते हैं । इसलिए योग में भी अथवा गीत की आवाज बड़ी नहीं होनी चाहिए । आज Whatsapp group में भी क्या हो रहा है, ज्यादा या भेजते रहते हैं यह भी एक प्रकार का आवाज ही तो है । जब हम आत्मा के लेवल पर कनेक्शन जोड़ने में सफल हो जाते हैं तब आसानी से ज्ञान उस आत्मा तक पहुँचा सकते हैं क्योंकि भीतर से तार जोड़ दिया है । ओम शांति

Q 16: मुरलियों में आता है कलंक लगने से हम कलंगीधर बनेंगे लेकिन कलंक तो उनपर लगता है जो विकर्म या बुरे कर्म करते हैं इसका भावार्थ स्पष्ट कीजिये ?

कलंक तो शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा पर भी लगते आये हैं, देवताओं पर भी लगे हैं । जो बुरा कार्य करते हैं उसपर भी टिप्पणी होती है और जो अच्छा करते हैं उस पर भी । इस संस्था पर भी लगते आये हैं । कलंक लगने से कोई पतित नहीं होता है बुरा कर्म करने से होता है । मनुष्य को स्वतन्त्र जबान मिली है स्वतंत्र हाथ मिला है तो उसका सदुपयोग भी कर सकते हैं तो दुरुपयोग भी । इस

लिए कहते हैं न कोई किसी के जबान और कलम को कहाँ तक रोकेगा ? कुछ भी करने के पहले यह हमें सोचना है कि इस कर्म द्वारा हम कौन सा खाता जमा कर रहे हैं इसलिए बाबा मुरलियों में कहते हैं कलंक को जितना सहन करोगे अथवा धारण करोगे तो कलंगीधर बनोगे । अंत में वे लोग ही फूलों की वर्षा करेगे जब उनको अपनी गलती का एहसास होगा ।

Q 17: आज मुरली में है कि सूक्ष्म वतन में प्रजापिता होता नहीं है यह कैसे ब्रह्मा बाबा तो फ़रिश्ता रूप में सूक्ष्म वतन में हैं.. कृपया स्पष्ट करें ?

प्रजापिता शब्द का अर्थ है प्रजा का पिता याने साकार में यह पालना का पार्ट निभाने से सम्बंधित है सूक्ष्म वतन में प्रजा की पालना का पार्ट नहीं होता, इससे स्पष्ट है कि जब ब्रह्मा बाबा साकार देह में थे तभी उनके लिए प्रजापिता टाइटल गाया हुआ है । परन्तु देह त्यागने के पश्चात वे संपूर्ण ब्रह्मा कर्मातीत स्टेज को प्राप्त हुए अर्थात कर्मबंधनो से मुक्त हो गए तब से उनका अव्यक्त ब्रह्मा का पार्ट शुरू हुआ और प्रजापिता वाला पार्ट समाप्त हो गया ।

Q 18: अमृतवेला ठीक करने से सब कुछ ठीक हो जायेगा यह किस मुरलियों में आया है ?

समय की पुकार (४-१-८० अव्यक्त) – आदिकाल ठीक न होगा तो मध्य और अंत भी ठीक न होगा । अमृतवेले को ठीक करेंगे तो सभी ठीक हो जाएगा ।

२४-६-७२ अव्यक्त में अमृतवेला को सारे दिन का फाउंडेशन वेला कहा गया है । यह वेला अपने आप और बाप से रूहरूहान करने का समय है, सारे दिन महनत से छूट जायेंगे ।

१६-११-९५ अव्यक्त में आया है जब आदि अर्थात अमृतवेला और अंत अर्थात सोने का समय अच्छा होगा तो मध्य स्वतः ही ठीक होगा ।

२१-९-१८ की साकार मुरली वरदान में आया है जैसे ट्रेन को पटरी पर खड़ा कर देते हैं तो आटोमेटिकली रास्ते पर चलती रहती है, ऐसे ही रोज़ अमृतवेले याद की लकीर पर खड़े हो जाओ। अमृतवेला ठीक है तो सारा दिन स्वतः सहयोग मिलता रहेगा और पुरुषार्थ भी सहज हो जाएगा ।

Q 19: आज की मुरली के स्लोगन में आया है कि मनसा सेवा वही कर सकते हैं जिनके पास शुद्ध संकल्पों की शक्ति जमा है । हम अपने शुद्ध संकल्पों की शक्ति को बढ़ा या जमा कैसे कर सकते हैं ? कृपया इसे थोड़ा स्पष्ट करें ।

मनसा सेवा शुद्ध एवं श्रेष्ठ संकल्पों द्वारा सूक्ष्म सेवा है । जब तक हम अपने मन बुद्धि को एकाग्र नहीं कर सकते और प्रकृति सहित विश्व की आत्माओं प्रति कल्याण करने की बेहद की भावना नहीं रखते तब तक यह सेवा अच्छी व ठीक रीती से नहीं कर सकते । इस सेवा के लिए संकल्पों का शुद्ध व शक्तिशाली होना अत्यावश्यक है । संकल्प हमारे शुद्ध व शक्तिशाली तब होते हैं १) जब हम ऊँची स्टेज पर स्थित होते हैं या आत्मिक स्वरुप में रहते हैं २) सूक्ष्म - स्थूल इन्द्रियों के प्रभाव से मुक्त रहते हैं

। स्थिति बनाने का महत्वपूर्ण साधन है अमृतवेला योग और दूसरी मुरली के पॉइंट्स का मनन

चिंतन याने योग और ज्ञान । योग के अंतर्गत कंबाइंड स्वरुप का अभ्यास, पाँच स्वरूपों का अभ्यास,

फ़रिश्ता स्थिति का अभ्यास, अशरीरी (बीजरूप) का अभ्यास करने से हमारे संकल्प शुद्ध एवं शक्तिशाली होने लगते हैं यह एक पहलू हुआ दूसरी ओर हमारे संचित संकल्पों की शक्ति विकारों और व्यर्थ संकल्पों के कारण नीचे की ओर ना बहे अथवा कमजोर ना बने इस पर भी अटेंशन देना पड़ेगा

। स्थूल की ही बात नहीं, मनसा में भी विकारी संकल्पों की प्रवेशता न हो इसका पुरुषार्थ बहुत जरुरी

है क्योंकि ये मन को अशुद्ध करते हैं, बुद्धि को भटकाते हैं और व्यर्थ संकल्प हमारी उर्जा को नष्ट करते हैं । जितना हमारा उर्जा का स्टॉक बढेगा उतना उसकी intensity बढ़ेगी और ज्यादा से ज्यादा दू्र तक उसको प्रवाहित कर सू्क्ष्म शरीर द्वारा सेवा कर सकने में सक्षम होंगे । मनसा सेवा से ज्यादा से ज्यादा आत्माओं की सेवा कम समय में कर सकते हैं क्योंकि इसमें न शरीर का न समय का और न स्थान का बंधन होता है । अंतिम समय में जब स्थू्ल सेवा के लिए scope नहीं रहेगा तब मनसा सेवा ही कर के आत्माओं को मार्गदर्शन और संतुष्ट कर सकेंगे ।

Q 20: हर मुरली में शिवबाबा याद करने पर जोर देते हैं, सिर्फ याद करने से ही विकर्म विनाश कैसे होता है कृपया स्पष्ट करें ?

जैसे स्थू्ल कीचड़े को भस्म करने के लिए अग्नि का इस्तेमाल होता है अथवा सू्र्य के किरणों को lens के माध्यम से एकाग्र करते हैं वैसे ही आत्मा द्वारा जन्मजन्मान्तर के विकर्मों द्वारा निर्मित संस्कार रूपी कीचड़े को भस्म करने के लिए परमात्मा रूपी ज्ञान सू्र्य की आवश्यकता होती है । आत्मा के विकर्म

रूपी कीचड़े का विनाश किसी भी स्थूल सूक्ष्म साधन द्वारा संभव नहीं क्योंकि कोई भी साधन महातत्व
अर्थात भौतिक पञ्च तत्वों के अंतर्गत आता है जिसे उर्जात्मक इथर कहते हैं यहाँ तक कि ब्रह्मतत्व जो स्वयं प्रकाशित इथर है उससे भी आत्मा के विकर्म विनाश नहीं होंगे । चैतन्य आत्मा जो दिव्य लाइट से निर्मित है एक अविनाशी सत्ता है और वह अति सूक्ष्म होने के कारण जब उसका कनेक्शन डायरेक्ट परमधाम में हाईएस्ट चैतन्य दिव्य ज्योति से होता है जो सदा सत्य सदा पावन सदा सर्वशक्तिमान है तब उससे उत्पन्न योगाग्नि ही जन्मजन्मान्तर के पाप व विकर्मों को भस्म करने में समर्थ होती है । जब आत्मा परमधाम में केवल एक विचार में स्थित रहती है तो highest stable state में रहती है
जिसे ही delta state भी कहते हैं । इस अवस्था में आत्मा supreme power house परमात्मा से अधिकतम उर्जा ग्रहण करती है जिससे विकर्म विनाश होता है । इसे ही ज्वालामुखी योग भी कहते हैं ।

Q 21: ओम शांति, मुरली में बाबा ने कहा है कि ऊपर से आयी आत्मा पवित्र होती है, उसे दुःख कैसे हो सकता है, जीसस के लिये यह बात समझ में आती है कि पवित्र आत्मा तन में आयी और उसके द्वारा सन्देश देती थी पर उनको फिर सूली पर कैसे

चढ़ाया यह थोड़ा विरोधाभास लगता है इसे स्पष्ट कीजिये ।

यह विरोधाभास नहीं है । जीसस की आत्मा दूसरी है और क्राइस्ट की दूसरी भले ही शरीर एक हो । जैसे शिवबाबा की आत्मा दूसरी और ब्रह्मा बाबा की द्रसरी है जिसके शरीर का बाबा केवल आधार लेते हैं । शिवबाबा का कोई तन का हिसाब किताब नहीं है । मुरली में आगे यह भी तो आया है कि गाली इस साकार को याने ब्रह्मा बाबा को मिलती है शिव तो निराकार है और कृष्ण तो पावन प्रिंस है जो सतयुगी श्रेष्ठाचारी दुनिया में जन्म लेता है । यह लॉ है कि सतोप्रधान आत्मा के पास्ट विकर्म न होने के कारण उन्हें कोई दुःख नहीं मिल सकता । धर्मस्थापक आत्मा परमधाम से डायरेक्ट उतरने की वजह से सतोप्रधान होते हैं । शरीर का हिसाब किताब उस माध्यम आत्मा का रहने की वजह से दुःख उनको अनुभव होता है धर्म स्थापक आत्मा को नहीं ।

Q 22: Baba often says in murli बच्चों को घड़ी नहीं तो आधी घड़ी बाप को याद करनी है

।

*,

A small

clarification on what does ghadi means.

In actual as described in hindu shastras and also as mentioned in various articles.

24 hrs contain 8 prahar

1 प्रहर = 3 hrs

1 घड़ी = 24 min

1/2 घड़ी = approx 12 - 15 min.

Now coming to recent murli dated 6-11-18 it was mentioned.

बाप कहते एक घड़ी, आधी घड़ी........ दिन में 8 घड़ियाँ होती हैं। उनसे भी बाप कहते एक घड़ी, अच्छा आधी घड़ी। 15-20 मिनट भी क्लास अटेन्ड कर, धारणा कर फिर अपने धन्धेधोरी में जाकर लगो।

Here ghadi = hrs (also mentioned in eng translation)
which means there are 8 hrs available in a day. Out of which one must devote 1 hr i.e एक घड़ी , if not 30 min i.e आधी घड़ी . If one can not even attend that then last alternative is आधी की भी आधी
घड़ी i.e 15-20 min. Omshanti.

Q 23: साकार मुरली में आया है कि रूद्र माला से रुण्ड माला में आना है इसको थोड़ा क्लियर कीजिये, रूद्र माला क्या है और रुण्ड माला क्या है दोनों में अंतर बतायें ?

रूद्र माला याने शिव की माला । शिव सर्व आत्माओं के पिता होने से सभी 700 करोड़ आत्मायें
इसमें आ जाती है । इसलिए इसे आत्माओं की

माला भी कहा जाता है

जबकि रुण्ड माला याने विष्णु की माला जिसमें 9 लाख की संख्या होती है सतयुग के शुरुआत में ।

रूद्र माला परमधाम की माला है निराकारि माला है तो रुण्ड माला साकारि प्रवृत्ति मार्ग की माला है ।

रूद्र माला को रूहानी माला तो रुण्ड माला को जिस्मानी माला कहेंगे । एक है ब्रदर्स की माला तो

दू्सरा है ब्रदर्स और सिस्टर्स की माला।

एक है मुक्ति की माला तो दू्सरा है जीवनमुक्ति की माला । पहले निराकारी माला परमधाम में आयेंगे

फिर साकारी माला बन विष्णु लोक में आयेंगे ।

एक तीसरा है ब्राह्मणों की माला जो अभी पू्री बनती नहीं ऊपर नीचे होती रहती है । अंत में बनेगी

जब रूद्र की माला बनेगी । फिर भक्त माला भी है जो द्वापर से शुरू होता है वह है रावण की माला

Rudra Mala is the garland of Shiva (the Supreme Soul). All the 7 billion human souls come in this

mala, hence it is also called a **Mala (garland) of all souls**. This mala is depicted around the Supreme

soul (Shiva).

Whereas **Rund Mala Vishnu's Garland** , which has a number of 9 lakhs at the beginning of Satyuga.

Rudra Mala is of Paramdham (supreme abode) is an incorporeal mala of incorporeal souls, then

Rund Mala is the garland of souls who are in corporeal world in the Golden age. It is called

''**Vishnu's**

mala'' because in the golden age, there is a divine rule of the couple - 'Lakshmi and Narayan' who

combinly are known as ''**Vishnu**''.

Rudra Mala is Ruhani Mala (the garland of spirits) and Rund Mala will be called **'Jismani Mala'**. One is

Brother's garland (soul to soul relationship). And the second is a **garland of Brothers and Sisters**.

One is the **garland of liberation (Mukti)** the second is the **garland of liberation in** life (Jeevan

mukti). First Nirvikala Mala will come in Paramdham, then becoming **Sakari Mala** (corporeal

garland) will come in Vishnu loka (world of Vishnu – the golden age).

There is a third the **garlands of Brahmins** which is not yet completed and remain on top. The end

will be formed when **Rudra's garland** will be made. Then there is also a **devotee mala** which starts

in dwapar yug (copper age) also referred as **mala of Ravana**. This is a mala (garland) formed of

devotees.

Q 24: बाबा को कहाँ, कैसे याद करें इसको स्पष्ट करें क्योंकि बाबा कभी कहते है मुझे ऊपर

याद करो और कभी कहते मैं नीचे आ गया हूँ ।

मुरली में बाबा ने स्पष्ट किया है कि जब बाबा साकार तन में प्रवेश हो सन्मुख मुरली चला रहे हैं

तभी मुझे उस तन में याद करना है । पहले शरीर जरुर याद आएगा क्योंकि बड़ी चीज याद करने में

सहज है और उस आत्मा का आधार है, उससे ही आत्मा के गुण व कर्तव्य साकार में प्रकट होते हैं परन्तु उस देह में उपस्थित देही याने आत्मा को ही वैल्यू देनी है क्योंकि करावनहार तो अविनाशी

चैतन्य आत्मा ही है । बाबा ने कई बार यह भी स्पष्ट रूप से कहा है कि ब्रह्मा तन में अवतरित मुझ निराकार को याद करो क्योंकि देह को याद करने से विकर्म विनाश नहीं होगा उसमें स्थित ज्योतिबिंदु परमात्मा को याद करने से ही होगा ।

राजयोग की सही विधि अनुसार हमें स्वयं को निराकार ज्योतिबिंदु आत्मा समझ उस निराकार ज्योतिबिंदु परम आत्मा को स्नेहयुक्त होकर याद करना है । स्नेह अथवा निःस्वार्थ प्रेम (**unconditional love**) का ही दूसरा नाम याद है । जहाँ सच्चा प्रेम नहीं वहाँ सच्ची याद भी नहीं हो सकती ।

जब बाबा सम्मुख साकार में नहीं हैं तो उन्हें परमधाम में ही याद करना है । परमधाम तो है ही

निराकारी दुनिया वहाँ तो निराकारी स्वरुप में ही याद करना है यह तो understood है । सूक्ष्म वतन है आकरी दुनिया, फरिश्तों की दुनिया वहाँ पर सूक्ष्म शरीर में निराकार को याद करना हैं ।

सार रूप में बाबा जब सम्मुख हैं तो साकार में निराकार को याद करें नहीं तो परमधाम में , सूक्ष्म

वतन में आकार में निराकार को याद करें और परमधाम में डायरेक्ट निराकार को याद करें ।

जिस स्वरुप में परमात्मा को याद करते हैं स्वयं को भी उसी चोले में अर्थात स्वरुप में देखना है परन्तु चाहे कोई भी चोला हो या सम्बन्ध हो उस चोले में उपस्थित चैतन्य आत्मा की स्मृति नहीं भूलनी चाहिए नहीं तो आत्मा का पक्का कनेक्शन परमात्मा से नहीं जुड़ेगा और याद का बल भी जैसा और जितना मिलना चाहिए वैसा और उतना नहीं मिलेगा । ओम शांति....

Q 25: बाबा बारबार क्यो कहते कि याद करो अब घर जाना है, अशरीरी पन की प्रैक्टिस करो। ?

हम जहाँ जाना होता है वहा स्थूल रीति से जाने से पहले मनबुद्धि द्वारा बहुत बार चक्कर लगा आते है। जैसे हमे किसी hill station जाना है तो पहले से तैयारी कर लेते है वहाँ ठंड होगी। गर्म कपड़े pack कर लेते है। फिर जहाँ ठहरना है सो होटल Lodge वालो का पता करना शुरू करते है। वहाँ कहा कहा घूमना है उसके बारे में भी जानकारी इकट्ठा करना शुरू करते है। फिर वहा जितना दिन रहना है हर दिन का tentitive प्लान भी मन में सोच लेते है। यानी हम अभी स्थूल रूप से पहुंचे नही हैं पर बुद्धि में बार बार वहाँ की बाते आती रहती है और जब जब हम यह बातें सोचते है तब तब बुद्धि उस जगह से जुड़ जाती है । मतलब बुद्धि का योग उस

जगह से होता रहता है। और जब किसी से हमारा योग लगता है तब हम वहां की एनर्जी को भी attract करते। कनेक्शन से एनर्जी का conduction शुरू होता है । इसी तरह जब हम आत्माओ को पता है अब हमें परमधाम जाना है परमात्मा के साथ जाना है। अब परमात्मा के संग जहाँ जाना है, वहाँ की महिमा का बार बार बुद्धि में वर्णन करेंगे तो परमधाम से कनेक्सशन हो जाएगा। वहाँ की पवित्रता और शांति की एनर्जी को हम आवाह्न करेंगे और उसे ग्रहण करेंगे।

इसलिए बाबा कहते है याद रखो की अब घर जाना है । जाने की तैयारी करो। मतलब बेहद का वैराग्य करो इस संसार का। जहाँ जाना है वहां बहुत शांति है स्वीट साइलेंस है । उस स्वीट साइलेंस को याद करो बुद्धि से जुड़ जाओ। अभी स्थूल में आत्मा वहा शरीर छोड़ तो नही जा सकती है।

जब समय आएगा.. जाना है.... मानो या ना मानो जाना तो है ही....जब तक नही पहुचेंगे तब तक जाने की तैयारी करते रहना है। क्या क्या करना होगा ताकि हम खुशी खुशी परमधाम परमात्मा के संग जा सके ?? वो भी हमारा गाइड पंडा शिवबाबा बताते है।

1) देह सहित देह की सभी सम्बधों को भूल जाओ

नष्टो मोह बन जाओ।

2) स्वीट साइलेंस है वहाँ तो अंतर्मुखी बनो मन का भी मौन रखने की आदत डालो। ज्यादा आवाज में नही आओ। जितना जरूरी है उतना ही बोलो।

3) पवित्रता का घर है वो तो अभी तन,मन,धन से पवित्रता को अपनाओ। आत्मा को पवित्र बनाओ।

4) बहुत दूर है परमधाम मगर आत्मा में इतनी शक्ति है कि वो सेकंड में वहां पहुँच जाती है इसलिए अपनी शक्ति को इमर्ज करो उसके लिए बार बार मन को एक सेकंड में जहाँ जाना चाहे वहा जाने का अभ्यास कराओ मधुबन की चार धाम यात्रा कराओ, सूक्ष्मवतन में जाओ ,कभी अपने ही सेंटर का

चक्कर लगाओ, कभी विश्व ग्लोब पर जाके सकाश दो। यह है मन बुद्धि की exercise जिससे आत्मा अपनी rocket से भी ज्यादा फ़ास्ट उड़ने की शक्ति को जागृत कर ले। यह सब करेंगे तो जब बाबा कहे चलो बच्चे अब घर चलो तो फट से हम अपने मंजिल के लिए चल पड़े। ओम शान्ति

Q 26: बाबा ने मांगने से मना किया है , मुरली में आता है माँगने से मरना भला तब हम अधिकार से कैसे ले सकते है ? प्लीज क्लीयर कीजिए

आपको यदि अपने लौकिक मात पिता से कुछ माँगना हो तो आप किस मनोस्थिति से माँगती है और

किसी अन्य से कुछ माँगना हो तो क्या उसी मनोस्थिति से माँगेगी ।

विवाहित कन्या का भी अपने मायके के व्यवहार और ससुरघर के व्यवहार में फर्क साफ़ देखने में आता है । ससुराल में भी जब वह नयी नवेली दुल्हन के रूप में आती है तब के व्यवहार और कई वर्षों के बाद का व्यवहार एक समान नहीं रहता है ।

एक में सम्बन्ध के कारण अपनापन है इसलिए अधिकार से माँगना होता है जबकि दू्सरे में यह नहीं

होने की वजह से संकोच अथवा झुकाव है । जहाँ पर प्यार, मित्रता और घनिष्ठता है वहाँ सम्बन्ध का निर्माण होता है जिससे अपनापन अनुभव होता है और जहाँ अपनापन होता है वहाँ अधिकार स्वतः पैदा हो जाता है। भक्ति में परमात्मा का सच्चा परिचय, उनसे अपना सम्बन्ध और प्राप्तियों का ज्ञान न होने से अधिकार की भावना नहीं रहती इसलिये माँगते रहते हैं । दू्सरी बात बाबा ने दू्सरों से माँगने के लिये मना किया है क्योंकि हम देवता अर्थात दाता बन रहे हैं और दाता माँगते नहीं बल्कि देते हैं । बाबा के जब हम बच्चे बनते हैं तब भक्त नहीं रह जाते अधिकारी बन जाते हैं और माँगने की वृत्ति धीरे धीरे समाप्त हो जानी चाहिए । जब अपने अधिकारीपन की स्थिति अथवा सर्वप्राप्ति

स्वरुप के स्वमान से नीचे आते हैं तभी ही मांगने की वृत्ति इमर्ज होती है । हाँ बाप के सामने प्यार अथवा अधिकार से हम अपनी इच्छा जरुर रख सकते हैं पर उसके बाद निश्चयबुद्धि हो निश्चिंत हो जाना चाहिए क्योंकि वो जानता है हमारे लिए क्या जरुरी और उचित है, बस पूर्ण रूप से विश्वास और सही वक्त आने का इंतज़ार करना पड़ता है । ओम शान्ति

Q 27: ओम शांति, बाबा कहते हैं कि आत्मा, परमात्मा और प्रकृति अविनाशी है इनकी रचना मैंने नहीं की परन्तु आज की मुरली में है कि इन आँखों से जो भी दिखाई देता है वह रचना है, धरती पर उगने वाली वनस्पति, सभी जीव, ग्रह, नक्षत्र, तारे आदि भी तो दिखाई देते हैं अर्थात ये सब रचना हैं और परमात्मा इनका रचयिता जबकि प्रकृति के ये पांच तत्व तो अनादि हैं कृपया स्पष्ट करें ?

प्रकृति के मूल ५ तत्व अनादि, अविनाशी हैं । लेकिन संकल्पों से उस तत्व के द्वारा निर्माण तो किया
जा सकता है अर्थात उसको आकार अथवा डिजाईन तो दिया जा सकता है । जैसे सोनार सोना नहीं बनाता पर उसके दागिने तो बना सकता है । इसे भी ऐसा ही समझना । अपने संकल्पों के द्वारा परमात्मा प्रकृति का परिवर्तन करता है उसे अपने मूल स्वरुप में लाता है इस कारण वह रचयिता है

। लौकिक मातपिता को भी हद का रचयिता कहते हैं क्योंकि वे निमित्त बनते हैं नयी आत्मा को गर्भ में प्रवेश कराने के लिए । इसी तरह परमात्मा भी निमित्त बनता है प्रकृति के तत्वों को और जीवात्माओं को पार्ट बजाने के लिए । जैसे आत्मा नहीं तो शरीर नहीं वैसे परमात्मा नहीं तो यह विश्व नहीं । यह सारा विश्व ही जैसे परमात्मा का विराट रूप है । ओम शांति

Q 28 : काम महाशत्रु है.... आदि, मध्य अंत दुःख देता है यह वाक्य मुरलियों में कई बार आता है । मैं ज्ञान में नया हूँ और अब तक कुमार हूँ । क्या यह बात किसी से विवाह करके सम्बन्ध बनाने पर भी लागू होता है **? ...** कृपया स्पष्ट करें...

आत्मा वास्तव में निराकारी, निर्विकारी (**viceless** **)** है । देहभान के कारण ही विकार का जन्म होता है । याने आकार से विकार । इसलिये बाबा बार बार कहते हैं अपने को आत्मा समझो, अशरीरी बनो । कोई भी विकार आत्मा को उसके वास्तविक pure stage अर्थात पावन स्थिति से नीचे गिराता है ।

जिस किसी भी कर्म से आत्मा के गुण और शक्तियां नष्ट होती है उसे गिरना कहा जाता है । विकार

में जाने को ही पशुता कहा गया है । यह दैवी गुण की श्रेणी में नहीं आता । देवतायें निर्विकारी होते

हैं। जानवरों में भी विकार होते हैं परन्तु वे भी प्राकृतिक नियमानुसार चलते हैं परन्तु आज का मनुष्य उससे भी गिर गया है । काम विकार में मनुष्य की शक्तियां अन्य विकारों की तुलना में ज्यादा नष्ट होती है । पुनः उस शक्तियों को संग्रहित होने में बहुत समय लग जाता है । इसलिये बाबा कहते हैं पांचवी मंजिल से नीचे गिरना । इस कारण ही काम विकार में जाने वाले को पतित कहा गया है । कई ऐसे छोटे जीव हैं जिनकी केवल एक बार ही काम विकार में जाने से मृत्यु हो जाती है । एक स्लोगन भी है काम विकार नरक का द्वार और यह सही भी है क्योंकि द्वापर युग से देवतायें जब इसके चंगुल में फसें तब से नरक की शुरुआत हुई । अब कलियुग अंत में तो इसकी अति हो गयी है जिसके परिणाम आज दुनिया में दुःख,अशांति के रूप में देख रहे हैं । काम का उम्र से लेना देना नहीं यह एक अग्नि की तरह है जो चिंगारी के रूप में प्रकट तो होती है परन्तु फिर एक ज्वाला का रूप धारण कर लेती है जिसमें आत्मा के सभी गुण व शक्तियां स्वाहा हो जाती है, विवेक काम नहीं करता । मुख्यतः यह पवित्रता रूपी संपत्ति को ख़ाक कर देता है और आत्मा काली बन जाती है । इस पर लगाम लगाने के लिए ही द्वापर से हमारे

ऋषि मुनियों ने विवाह प्रथा की रचना की ताकि केवल संतति उत्पत्ति के लिए ही इसका उपयोग हो सके और उसकी पालना की जिम्मेवारी लें। परन्तु धीरे धीरे इसका दुरुपयोग होता गया । विवाह के पीछे का जो मकसद था वह खोता चला गया । पतितपना में दुःख नहीं होता तो परमात्मा को हे पतित पावन आओ यह कहकर नहीं पुकारते । कलियुग के अंत में काम के इस विकराल रूप के कारण ही परमात्मा को अवतरित हो काम महाशत्रु है यह महावाक्य उच्चारने पड़े जो गीता शास्त्र में भी है परन्तु कोई इसे फॉलो नहीं करता । विवाह तो सतयुग , त्रेता में भी होता है परन्तु वहाँ विकार के कारण शारीरिक सम्बन्ध नहीं बनता बल्कि योग बल के द्वारा संतान का जन्म होता है इसलिये वहाँ पर देवतायें सुख शान्ति के मालिक हैं । परमात्मा अब वही नयी पावन दुनिया की स्थापना करने आये हैं जिसका आधार योगबल है जो पवित्रता को धारण करने से प्राप्त होता है, हमें अब उसकी तैयारी करनी है । भोगबल का अनुभव तो हम ६३ जन्म करते आये हैं और बदले में दुःख, अशांति ही पाया तो क्या अब ऐसी पवित्रता, सुख, शान्ति वाली दुनिया में राज्य भाग्य लेने के लिए एक जन्म के लिए पवित्रता का व्रत नहीं ले सकते ? क्या यह सौदा बहुत महंगा है ? इसका निर्णय आप को स्वयं ही लेना है । काम का अर्थ केवल स्थूल विकार

से ही नहीं लेना चाहिए । जब तक मन, बुद्धि में भी इसका चिंतन चलता रहेगा तब तक यह अपना प्रभाव सूक्ष्म रूप से करता रहेगा और हमारी स्थिति को गिराता रहेगा । किसी भी प्रकार की कामना रखना भी काम के अंतर्गत ही आता है । इसलिये जब तक कामनाओं को जड़ से नहीं निकालेंगे तब तक काम से पूर्ण तरह मुक्त होना संभव नहीं है ।

Q 29 : बाबा मुरलियों में सदा कहते हैं कि सार में स्थित हो जाओ । यह सार में स्थित होना क्या होता है ?

आत्मिक स्वरुप में स्थित होना ही सार में स्थित होना है । यह आत्मा के उपराम और विश्राम की अवस्था है, कर्मों के पार्ट से परे अर्थात फुल स्टॉप की अवस्था है, प्रश्नों के पार बिंदु स्वरुप में स्थित होने के अवस्था, जहाँ मन संसार में बाबा को और बाबा में ही संसार देखता है । सार में स्थित रहेंगे तो माया और बाबा दोनों को समझा जा सकता है, विस्तार द्वार समझना मुश्किल है । निरंतर एक बाप की याद में रहो अर्थात एक निश्चयबुद्धि बनो और निश्चिंत रहो यही सार है । समय अति की तरफ जा रहा है । हर चीज़ का विस्तार हो रहा है याने माया का भी फैलाव हो रहा है इसलिये बाबा कहते हैं बच्चे सार में स्थित हो जाओ । बाप के डायरेक्शन पर नहीं चलेंगे तो माया के डायरेक्शन पर चलना पडेगा । जो सार में स्थित हो रहे होंगे

वे अंतर्मुखी होंगे, उन्हें विस्तार में जाना, ज्यादा आवाज में आना, ज्यादा सुनना सुनाना पसंद नहीं आयेगा । यह हर कोई स्वतः चेकिंग कर सकता है।

Baba always says in Murli to be stabilized in the essence. What does it means to be situated in essence ?

To remain stable in the atmik swarup (spiritual form) itself is to be situated in the essence. It is the state of detachment/retirement and relaxation of soul, beyond the part of the karma, i.e the state of full stop, the state of being situated in the form of a point beyond the question, where the mind sees Baba in the world and the world in one Baba. If you remain in the essence, both Maya and Baba can be understood, it is difficult to understand otherwise. **Be in constant remembrance of a father that is, have a faith in intellect for one father and become carefree. This is the essence.** Time is going on to extremes. Everything is undergoing expansion and Maya is spreading too, so **Baba says that the child must remain stable in the essence.** If you cannot follow the direction of the father, then you will have to follow the direction of Maya. Those who are going to be situated in the essence will be introverted, they will not like to go into the expanse, come in more sound, speak and hear more. Everyone can do their own checking.

Q 30 : मुरली में जो ब्राह्मणों की चोटि कहते हैं उसका भावार्थ क्या है कृपया समझायें ?

किसी भी सर्वोच्च स्थान अथवा शिखर को चोटी कहा जाता है (the apex or the topmost point) जैसे पर्वत की चोटी अथवा मस्तक की चोटी । परन्तु मुरलियों में बाबा ने विराट रूप में ब्राह्मणों को चोटी के रूप में संबोधित किया है क्योंकि ब्रह्मा मुख वंशावली ईश्वरीय संतान होने की वजह से अन्य वर्णों की तुलना में उनका स्थान सर्वश्रेष्ठ व सर्वोच्च है और उसके पश्चात ही देवता, क्षत्रिय, वैश्य व शुद्र वर्ण क्रमानुसार आते हैं । ब्राह्मणों में भी उनकी चोटी इन कारणों से प्रसिद्ध है । ब्राह्मणों की चोटी १) पवित्रता का प्रतीक है २) ज्ञान का प्रतीक है ३) दृढ़ संकल्प का प्रतीक है और आखिर में बाबा रमणीकता में चोटी को माया के अथवा भक्ति के दुबन से निकालने के लिये आधार के रूप में भी वर्णन करते हैं कि मनुष्य जब भक्तिमार्ग के दुबन अथवा दलदल में फंस जाते हैं और एकदम गले तक आ जाते हैं जब बाकी चोटी रह जाती है तब बाप आते हैं बचाने क्योंकि पकड़ने के लिये कुछ तो चाहिए ना ।

Q 31 : आज की मुरली में बाबा ने कहा “ सतयुग में काल नहीं आता तो महाकाल भी नहीं आता ” कृपया स्पष्ट कीजिये ?

काल अर्थात सीमित अथवा असामायिक मृत्य जो

स्वर्ग में नहीं होता । शिवबाबा को महाकाल
इसलिए कहते हैं क्योंकि वे विश्व की सभी आत्माओं
को बिना उनकी इच्छा के परमधाम या मुक्तिधाम
ले जाते हैं । पर यह महाकाल वाला कर्तव्य
कलियुग के अंत में ही लागू होता है, सतयुग या
त्रेतायुग
में शिवबाबा या महाकाल का कोई कार्य नहीं होता ।

BK Anil Kumar
pathakau71@gmail.com